



वेद-वार्ता

Veda-vārtā

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन की पत्रिका

News letter of Maharshi Sandipani Rashtriya Vedavidya Pratishthan, Ujjain

विक्रम संवत् २०८१

अप्रैल २०२४ से मार्च २०२५ तक

संख्या - ४९

कुल पृष्ठ संख्या - २८

समाचार संकेतिका

❖ साचिव्यम्	01-02
❖ महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना, उद्देश्य एवं प्राधिकरण	03-04
❖ प्रतिष्ठान के विभिन्न कार्यकलाप	04
❖ महासभा की 27 वीं बैठक	04-05
❖ शासी परिषद की 47वीं बैठक	05
❖ प्रतिष्ठान के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यशाला	05
❖ आचार्य शङ्कर प्रकटोत्सव	05-06
❖ अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह	06
❖ प्रतिष्ठान के अधिकारी एवं कर्मचारीगण	07
❖ पुनर्शर्या पाठ्यक्रम	07-08
❖ महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा संचालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, द्वारका हेतु भूमि प्राप्त	08
❖ प्रतिष्ठान पूरक परीक्षा कार्यक्रम	08
❖ सरकारी उपलब्धि एवं योजना एक्सपो- 2024	09
❖ वेद कक्षा वार्षिकोत्सव	09
❖ 78 वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह- 2024	09
❖ महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान का 38 वाँ स्थापना दिवस समारोह 2024	10
❖ राजभाषा हिन्दी दिवस समारोह	11
❖ स्वच्छता अभियान	11-12
❖ स्वास्थ्य केन्द्र	12
❖ प्रतिष्ठान परिसर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन द्वारा आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएँ	12
❖ अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन	13-15
❖ महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के अन्तर्गत श्रीजगदाथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, पुरी, ओडिशा का द्वितीय स्थापना दिवस महोत्सव	15
❖ क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन	15-19
❖ अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठियाँ	20-23
❖ वेद ज्ञान समाह समारोह	23
❖ सभी के लिए वैदिक कक्षाएँ	23
❖ जनजातीय गौरव दिवस एवं संविधान दिवस	24
❖ 79वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह- 2025	24
❖ प्रतिष्ठान द्वारा द्वादश ज्योतिर्लिंगों में सोमयाग का आयोजन	25-26
❖ महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन एवं अनुलग्नक-1	26-28

साचिव्यम्

प्रिय पाठको ! महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान अपनी विविध सफलताओं को इस वेदवार्ता के संयुक्त अंक में प्रस्तुत कर अपार हर्ष का अनुभव कर रहा है। जैसा कि हम सभी जानते हैं धर्म, संस्कृति तथा शाश्वत ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से वेद का महत्व सर्वोपरि है। वेद सम्पूर्ण धर्मों का मूल है, यह पितरों, देवों तथा मनुष्यों का सनातन चक्षु है। वेदोऽखिलो धर्ममूलम्, तथा 'पितृदेव मनुष्याणां चक्षु सनातनम्' वेद के इस महत्व को जानकर ही उसके अध्ययन पर विशेष बल दिया गया है। जैसा कि शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि धन से परिपूर्ण पृथिवी को दान करने से भी उतना फल नहीं प्राप्त होता है जितना कि वेद स्वाध्याय से। इसीलिए वेद स्वाध्याय की परम्परा को नियमित बनाए रखने के लिए शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का अभूतपूर्व योगदान है।

प्रतिष्ठान ने अपने समस्त अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित कर प्रशासनिक तथा वित्तीय प्रबन्धन की जानकारी उपलब्ध कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। आचार्य शङ्कर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के निर्देशानुसार पञ्च दिवसीय आचार्य शङ्कर प्रकटोत्सव कार्यक्रम ओंकारेश्वर धाम में पूर्ण किया। छात्रों के साथ अध्यापकों में उच्चतर गुणवत्ता, व्यावहारिक शिक्षा, स्वावलम्बन हेतु देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में 9 पुनर्शर्या पाठ्यक्रम प्रशिक्षण आयोजित कर वैदिक शिक्षण की तकनीकी विकास, वैदिक अध्ययन-अध्यापन में परस्पर सामंजस्य, एकरूपता, गुणवत्ता का लाभ प्रतिष्ठान के लगभग समस्त आचार्यों ने प्राप्त किया है। नई दिल्ली में आयोजित सरकारी उपलब्धि एवं योजना एक्सपो- 2024 में प्रतिष्ठान ने भाग लिया था इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठान को ''वैदिक अध्ययन विकास में उत्कृष्टता'' के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अविरत....2

प्रतिष्ठान का उद्देश्य वेदों का संरक्षण, संवर्धन, विकास एवं प्रचार-प्रसार करना, वेदों में निहित ज्ञान राशि का अनुप्रयोग एवं अनुसन्धान करके आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से जोड़ना है। प्रतिष्ठान के विविध उद्देश्य, स्थापना नियमावली एवं नियमों में निर्धारित हैं। यह नियम जल विज्ञान, कृषि, पर्यावरण, विज्ञान, मौसम विज्ञान, जलवायु परिवर्तन, वर्षा पैटर्न आदि में विशेष सन्दर्भ में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर वैदिक ज्ञान के आधुनिक रीति से अध्ययन का प्रावधान करते हैं। इस पर गहन चर्चा के उपरान्त प्रतिष्ठान की शासी परिषद ने देश के 12 ज्योतिर्लिङ्गों में 12 सोमयाग के आयोजन के लिए प्रतिष्ठान की परियोजना समिति की संस्तुति को स्वीकृति प्रदान की। इसके बाद प्रतिष्ठान ने अक्षय कृषि परिवार चिन्तन फार्म, कुकमा गाँव, भुज, कच्छ, गुजरात के संयुक्त तत्त्वावधान में मार्च-2025 तक 6 सोमयाग क्रमशः रामेश्वरम्, भीमाशंकर, त्र्यम्बकेश्वर, घृष्णोश्वर, मल्लिकार्जुन तथा ओंकारेश्वर में सम्पन्न किए जा चुके हैं। इसी क्रम में प्रतिष्ठान द्वारा संचालित समस्त योजनाएं अबाधगति से सुनियोजित चलती रहीं।

प्रो. विरुद्धपाल वि. जड्डीपाल,
सचिव, म.सा.रा.वे.वि.प्र., उज्जैन

• अध्यक्ष : श्री धर्मेन्द्र प्रधान

माननीय शिक्षा मन्त्री, भारत सरकार

• उपाध्यक्ष : प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र

माननीय उपाध्यक्ष

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

प्रो. हृदय रंजन शर्मा

माननीय उपाध्यक्ष (दिनांक 01.10.2024 से)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

• प्रधान सम्पादक : प्रो. विरुद्धपाल वि. जड्डीपाल

सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• सम्पादक : डॉ. अनूप कुमार मिश्र

सहायक निदेशक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• सह-सम्पादक : श्री देवाशीष तिवारी

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

डॉ. शम्भुनाथ मण्डल

कनिष्ठ शोध अध्येता, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• तकनीकी सहयोग : श्री शैलेन्द्र डोडिया

डी.ई.ओ., महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान



प्रकाशक :

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ओ. जवासिया, उज्जैन (म.प्र.) 456006

दूरभाष : (0734) 2502254, 2502255

ई-मेल : msrvvpujn@gmail.com

वेबसाइट : www.msrvvp.ac.in

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना, उद्देश्य एवं प्राधिकरण

वेद अध्ययन की श्रुति / मौखिक परम्परा को संरक्षित, संवर्धित एवं विकसित करने के उद्देश्य से सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 (1860 की XXI) के अनुसार दिल्ली से 20 जनवरी 1987 को संस्थापना स्मरणपत्र और नियमों के पंजीयन सं S-17451/1987 के अन्तर्गत “राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान” नामक स्वायत्त संस्थान का अखिल भारतीय सोसाइटी के रूप में गठन किया गया। प्रतिष्ठान की स्थापना को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने संकल्प (Resolution) संख्या एफ. 6-3/85- संस्कृत-IV द्वारा दिनांक 30 मार्च 1987 को राजपत्र द्वारा प्रकाशित कर उद्घोषित किया। सस्वर वेदघोष के साथ श्रावण पूर्णिमा/रक्षाबन्धन/वेदारम्भ के पावन दिन में राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान का उद्घाटन 10.08.1987 को राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में हुआ।

महर्षि सान्दीपनि, जिन्होंने उज्जयिनी में अपने वेद-वेदाङ्ग-कला आदि विद्याओं का गुरुकुल की स्थापना कर भगवान् श्रीकृष्ण को समस्त वैदिक ज्ञान प्रदान किया था, उन के स्मरण में, मई 1993 में उज्जैन में स्थानान्तरित होने के उपरान्त महर्षि सान्दीपनि के स्मरण में “महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान” के नाम से भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय की अधिसूचना संख्या F.6-21/92-संस्कृत-2 दिनांक 24.12.1993 द्वारा राजपत्र खण्ड-1, अनुभाग-1 में राजपत्र द्वारा उज्जैन में उद्घोषित हुआ। महाकाल ज्योतिर्लिङ्ग से दक्षिण दिशा में, जवासिया गांव में मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदत्त 23.6 एकड़ भूखण्ड में प्रतिष्ठान का हरित परिसर है एवं विवरण भवन निर्मित हैं।

प्रतिष्ठान की संस्थापना स्मरणपत्र में उल्लिखित 12 उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- (i) वेद अध्ययन की श्रुति-परम्परा का संरक्षण, परिरक्षण, संवर्धन एवं विकास, जिस के लिए प्रतिष्ठान विभिन्न कार्यकलाप प्रारम्भ करेगा। जैसा कि पारम्परिक वैदिक संस्थाओं और विद्वानों को सहायता, छात्रवृत्तियाँ आदि देना, दृश्य और श्रव्य टेप रिकार्डिंग आदि।
- (ii) वेदविद्वानों एवं वेदपण्डितों के माध्यम से मौखिक सस्वर वेदपाठ की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखना एवं उस पर बल देना।
- (iii) वेद में उच्चतर शोध हेतु समर्पित विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना।
- (iv) जिन विद्यार्थियों को वेद में निष्णता प्राप्त है, उन्हें शोध की सुविधाएं देना और उनमें समुचित वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना; जिससे कि वेदों में जो आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान है, विशेष रूप से गणित, खगोलशास्त्र, ऋतुविज्ञान, रसायनशास्त्र, द्रव्यचालिकी (हाइड्रोलिक्स) आदि के बारे में, उस का समसामयिकता/तादात्म्य आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से स्थापित किया जा सके साथ ही वेदविद्यार्थियों तथा आधुनिक विद्वानों के बीच घनिष्ठ वैचारिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।
- (v) देशभर में वेदपाठशालाओं और शोध केन्द्रों की स्थापना, उनका अधिग्रहण, प्रबन्ध चलाना या उनका पर्यवेक्षण या प्रतिष्ठान के किसी भी उद्देश्य के लिए उनका संचालन करना या भरण-पोषण आदि करना।
- (vi) जो भी वेद के धर्मस्व या न्यास बन्द हो चुके हैं, या ठीक ढंग से नहीं चलाए जा रहे हैं, उनको फिर से उज्जीवित करना एवं वेदप्रसार हेतु उनका प्रबन्ध पुनः चलाना।
- (vii) उन शाखाओं की ओर विशेष ध्यान देना जो लुप्त हो चुकी हैं, जिन के निपुण जानकार पण्डितों को खोजकर उन पण्डितों की व्यापक सूची तैयार करना।
- (viii) यह पता लगाना कि वेदों की श्रुति-परम्परा में विशेष प्रकार के सस्वर वेदपाठ कौन-कौन से हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों, संस्थाओं और मठों में प्रचलित हैं तथा उन की वर्तमान स्थिति क्या है?
- (ix) वेदशाखाओं की विभिन्न उच्चारण परम्पराओं की मूल-पाठ सामग्रियों, पाण्डुलिपियों के मुद्रण, ग्रन्थ, पुस्तकें, टीकाएँ, भाष्य एवं व्याख्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- (x) देश में नाना वेदशाखाओं के दृश्य या श्रव्य रिकॉर्ड उपलब्ध हैं उन के बारे में जानकारी संग्रह करना।
- (xi) अत्यन्त प्राचीन काल से अद्यतन काल तक वेदमूलपाठ एवं वैदिक साहित्य में निहित वैज्ञानिक ज्ञान, जिनमें विज्ञान, कृषि, प्रौद्योगिकी, दर्शन-शास्त्र, योग, शिक्षा, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान और वैदिक परम्परा के क्षेत्र सम्मिलित हैं, की उन्नति हेतु अनुसन्धान करना तथा ग्रन्थालय, अनुसन्धान सुविधाएँ, मानव शक्ति तकनीकी स्टाफ आदि का प्रावधान करना।

- (xii) प्रतिष्ठान की संस्थापना स्मरणपत्र के अनुरूप, प्रतिष्ठान के सभी उद्देश्यों या उद्देश्य की सफल प्राप्ति हेतु आवश्यक, आनुषङ्गिक या सहायक सभी कार्यकलाप प्रारम्भ करना।

महासभा, शासी परिषद एवं वित्त समिति प्रतिष्ठान के प्राधिकरण हैं। भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री जी प्रतिष्ठान के योजना निकाय महासभा एवं प्राशासनिक निकाय शासी परिषद के अध्यक्ष हैं। भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री जी द्वारा माननीय उपाध्यक्ष जी नामित किए जाते हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी वित्त समिति एवं परियोजना समिति के माननीय अध्यक्ष हैं।

प्रतिष्ठान के विभिन्न कार्यकलाप

प्रतिष्ठान द्वारा देश भर में वेद के प्रचार-प्रसार के लिये- वेद पाठशालाओं, गुरु शिष्य परम्परा इकाइयों, राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, शोध एवं प्रकाशन, सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, वेद पारायण, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, वेद प्रशिक्षण, वेद ज्ञान सप्ताह, वैदिक कक्षाएँ, वेद टेप रिकार्डिंग, घर बैठे वेदों की शिक्षा, वयोवृद्ध एवं वेद पाठियों-नित्याग्निहोत्रियों को वित्तीय सहायता आदि योजनागत कार्य किए जाते हैं। प्रतिष्ठान द्वारा वैदिक परम्परा के संरक्षण के लिए संचालित योजनाएँ :-

- | | |
|---|---|
| <ol style="list-style-type: none"> 1. वैदिक सस्वर उच्चारण की मौखिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने की योजना (गुरु शिष्य योजना एवं पाठशाला योजना) 2. वेद शोध केन्द्र 3. वैदिक प्रशिक्षण केन्द्र 4. राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय 5. वैदिक सामग्री संग्रहालय 6. वेद-विज्ञान प्रदर्शनी 7. शोध, प्रकाशन एवं पुस्तकालय 8. यज्ञशाला एवं ध्यान मण्डप गतिविधियां | <ol style="list-style-type: none"> 9. वेद ज्ञान सप्ताह समारोह 10. सभी के लिये वैदिक कक्षाएँ 11. वैदिक सम्मेलन एवं संगोष्ठियाँ 12. वैदिकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम 13. सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या पुरस्कार 14. वेदविद्या शोध पत्रिका एवं वेदवार्ता वार्तापत्र 15. पत्राचार पाठ्यक्रम : घर बैठे वेदों की शिक्षा 16. वयोवृद्ध वेदपाठियों, नित्याग्निहोत्रियों को वित्तीय सहायता 17. वैदिक वनौषधि परियोजना 18. वैदिक कौशल विकास परियोजना |
|---|---|

महासभा की 27 वीं बैठक

महासभा की 27 वीं बैठक माननीय शिक्षा मन्त्री जी एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष महोदय जी की अध्यक्षता में दिनांक 13.02.2025 को शासी भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय निम्नवत् हैं:-

- (1) प्रतिष्ठान को मानित विश्वविद्यालय के रूप में उन्नयन के लिए आशय पत्र (Letter of Intent) की समस्त शर्तों के अनुपालन, पाठ्यक्रम, अध्यापकों की स्थिति, आवश्यक आधारभूत संरचना आदि के सम्बन्ध में, मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को प्रतिवेदन प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया।



- (2) शासी परिषद ने सोमयाग आयोजन के द्वारा वर्षा की सम्भावना का वैज्ञानिक अध्ययन तथा अन्य प्राकृतिक महत्व का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के उद्देश्य से प्रतिष्ठान द्वारा 12 ज्योतिर्लिंगों में सोमयाग आयोजित कराने हेतु स्वीकृति प्रदान की।
- (3) शासी परिषद ने वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से प्रतिष्ठान से अनुदानित वेद पाठशालाओं/इकाइयों की वर्तमान स्वीकृत अधिकतम संख्या को माननीय शिक्षा मन्त्रीजी की स्वीकृति से नवीन पाठशालाओं/इकाइयों को सम्परीक्षण/निरीक्षण कर अनुदान जारी करने की स्वीकृति प्रदान की।

शासी परिषद की 47वीं बैठक

शासी परिषद की 47 वीं बैठक माननीय शिक्षा मन्त्री जी एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष महोदय जी की अध्यक्षता में दिनांक 13.02.2025 को शासी भवन, नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय निम्नवत् हैं:-

- (1) प्रतिष्ठान को मानित विश्वविद्यालय के रूप में उन्नयन के लिए वेद अध्यापकों की शैक्षणिक योग्यता, श्रेणी, अनुभव, दिशानिर्देश निर्धारित करने हेतु गठित समिति की बैठक के कार्यवृत्त पर विचार के दौरान माननीय शिक्षा मन्त्री जी भारत सरकार तथा प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष महोदय ने विद्वानों की उच्च स्तरीय कार्यशाला आयोजित कर विस्तृत प्रतिवेदन तैयार कर माननीय अध्यक्ष महोदय के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया।
- (2) शासी परिषद ने राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के लिए मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत 12 पदों के वर्गीकरण को स्वीकृति प्रदान करते हुए अन्य आवश्यक शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक स्टाफ को संविदा आधार पर रखने की स्वीकृति प्रदान की।
- (3) प्रतिष्ठान द्वारा वेद, ज्योतिष, वास्तु सम्बद्ध कौशल विकास पाठ्यक्रम संचालन के लिए संविदात्मक आधार पर 06 सहायक स्टाफ रखने की स्वीकृति प्रदान की।

प्रतिष्ठान के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यशाला (Training workshop for officers/employees of the Pratishthan)

दिनांक 1 से 6 अप्रैल 2024 तक प्रतिष्ठान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को फ़ाइल प्रबन्धन, अवकाश के नियम, वेतन निर्धारण, अग्रिम एलटीसी नियम, केंद्रीय एबीएस की खाता प्रणाली, अनुशासनात्मक मामले, प्रारूपण (संचार के विभिन्न रूप), अभ्यास, आचरण नियम, भण्डार एवं क्रय, MoA- विविध, सेवा मामले, सेवा पुस्तिका (सामग्री और पूर्व नियुक्ति औपचारिकताएं) आदि की कार्य प्रणाली का प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रतिष्ठान कार्यालय में प्रशिक्षण कार्यशाला (Training workshop) का आयोजन किया गया।



आचार्य शङ्कर प्रकटोत्सव

दिनांक 9-13 मई, 2024 (वैशाख शुक्र द्वितीया-षष्ठी) तक आचार्य शङ्कर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के निर्देशानुसार भारत की दिव्य संन्यास परम्परा, आर्ष चिन्तकों तथा विशिष्टजनों के गरिमामयी सान्निध्य में पञ्चदिवसीय आचार्य शङ्कर प्रकटोत्सव (एकात्म धाम) कार्यक्रम में प्रतिष्ठान को स्वर चारों वेदों का पारायण शङ्कर स्तोत्र पारायण, मूर्ति अनावरण हेतु पूजन एवं हवनादि विधि का दायित्व दिया गया था।

शङ्करजयन्ती के शुभावसर पर चतुर्वेद पारायण एवं यज्ञ आदि वैदिक कार्यक्रमों की निर्विघ्न पूर्वक सम्पूर्णता हेतु भगवान औंकारेश्वर का अभिषेक एवं अर्चन पारम्परिक वैदिकों द्वारा किया गया। यज्ञशाला में वैदिकों द्वारा प्रातः स्मरण, गणपति पूजन, पुण्याहवाचन, नान्दीश्राद्ध, मण्डलदेवतास्थापन-पूजन एवं अग्निस्थापन, नवग्रहहोम, गणपतिहोम। पारायण में चतुर्वेद पारायण (क्रमशः ऋग्वेद शाकलशाखा, शुक्लयजुर्वेद काण्वशाखा, शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखा, कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयशाखा, सामवेद कौथुमशाखा, सामवेद राणायनीयशाखा, सामवेद जैमिनीयशाखा, अथर्ववेद पैष्पलादशाखा, अथर्ववेद शौनकशाखा), शङ्कर भाष्य पारायण (क्रमशः उपनिषद्भाष्य पारायण, ब्रह्मसूत्र भाष्यपारायण, भगवद्गीता भाष्य पारायण) एवं शङ्करस्तोत्र पारायण, अर्थवर्शीष पारायण, सहस्र तुलसी अर्चन, शङ्करस्तोत्र पाठ, सायंकालीन पूजा, अष्टावधान सेवा, आरती एवं मन्त्रपुष्पाञ्जलि अनुष्ठानादि अनुष्ठित किये गये।

ब्रह्मोत्सव में शङ्कर स्तोत्रों का गायन - शृङ्गेरी सिस्टर्स, मुख्य अतिथि - स्वामी पुण्यानन्द गिरि जी, सारस्वत प्रबोधन- स्वामी चिदम्बरानन्द सरस्वती जी, अध्यक्षता स्वामी मस्त गिरि जी, स्वामी विवेकानन्द पुरी जी, पूज्य सन्तों तथा उसी कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रान्तों से साधु-सन्त एवं विद्वानों तथा प्रतिष्ठान के अधिकारी, कर्मचारीगण तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापक एवं छात्रगण उपस्थित रहे।



अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह

दिनांक 19 जून, 2024 को योग दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिष्ठान द्वारा उज्जैन में शोभायात्रा टॉवर चौक से प्राधिकरण भवन, पुराने प्रतिष्ठान परिसर भरतपुरी तक 250 वेद बटुकों ने वेद सन्देश यात्रा में भाग लिया। इस यात्रा में प्रो. विजयकुमार मेनन, कुलगुरु, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विवि, प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, अधिकारी, कर्मचारी और राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापक एवं छात्रों ने सहभागिता की। दिनांक 21 जून 2024 को महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान परिसर में योग दिवस मनाया गया। इसमें अधिकारी-कर्मचारियों के साथ ही अध्यापकों, वैदिक छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के योग अध्यापक अभिजित राजपूत ने किया।

इस अवसर पर प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, ने कहा कि योग के माध्यम से व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए अपना व राष्ट्र का कल्याण करने में समर्थ हो सकते हैं। जिसे आज सम्पूर्ण विश्व मानने लगा है।



प्रतिष्ठान के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन की स्थापना 10 अगस्त 1987 को दिल्ली में हुई थी। उस के उपरान्त सचिव पद सहित 37 पद स्वीकृत किये गये थे। किन्तु विविध कारणों से प्रतिष्ठान में कार्यरत नियमित नियुक्त कर्मचारियों की संख्या समग्र रूप से 20 से अधिक कभी नहीं रही। वर्ष 2024 तक 37 वर्षों में 20 पाठशालाओं से 137 पाठशालाएँ हुईं, 21 गुरुशिष्य से 342 गुरुशिष्य इकाइयां हुईं, छात्र संख्या 400 से 10000 से अधिक हुईं। 2001 से 2007 के बीच अधिकारी-गण आश्रित संरचना (Officer Cadre Based Structure) बनाने हेतु प्रयत्न किये गये किन्तु सफलता नहीं मिली। 2011 से 2013 के बीच तीन नवीन पद भरे गये। 2017 तक, पूर्व में स्वीकृत किन्तु खाली पड़े पद लगभग समाप्त हो चुके थे। देश भर में प्रतिष्ठान के विविध गतिविधियों, वेदों के कार्यक्रमों को संचालित करने, वेद के संरक्षण, वेद संवर्धन कार्यक्रमों को शीघ्रता से संचालित करने एवं निरीक्षण पूर्वक समुचित दिशा प्रदान करने के लिए प्रतिष्ठान में विभिन्न अधिकारियों एवं कार्य करने हेतु कर्मचारियों की आवश्यकता को देखते हुए भारत सरकार के माननीय शिक्षा मन्त्री जी एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष महोदय श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी के कर्तृत्वशक्ति से वर्ष 2022 में वित्त मन्त्रालय द्वारा 14 नवीन पदों को सृजन किया गया एवं समाप्त हुए 04 पदों को पुनः उज्जीवित किया गया।

भारत सरकार से स्वीकृति प्राप्त नियुक्ति नियमावली अनुसार विभिन्न पदों के लिए नियुक्ति की गई। इसके परिणाम स्वरूप प्रतिष्ठान में कार्यरत कुल अधिकारियों एवं कार्मिकों की संख्या 28 हैं (31-03-2025 की यथातिथि)। अभी भी 4 पद नियुक्ति प्रक्रिया में हैं। इसी क्रम में पदोन्नत किए गए कार्मिकों का विवरण निम्नानुसार है –

स.क्र.	कार्मिक का नाम	पदोन्नति पूर्व पद	पदोन्नति उपरांत पद	पदोन्नति की तिथि
1.	श्री श्रीकांत चौबे	सहायक	अनुभाग अधिकारी	13.11.2024
2.	श्री चन्द्रेश्वर मिश्र	प्रवर श्रेणी लिपिक	सहायक	19.12.2024
3.	श्री दीपक चावड़ा	अवर श्रेणी लिपिक	प्रवर श्रेणी लिपिक	01.01.2025

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान द्वारा समस्त अनुदानित वेद पाठशालाओं के वैदिक अध्यापकों ने वैदिक शिक्षण की तकनीकि विकास, कौशल, वैदिक अध्ययन-अध्यापन में एक दूसरे के साथ सामंजस्य, एकरूपता एवं आचार्यों की योग्यता में गुणवत्ता लाने हेतु इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम को प्रारम्भ किया गया है, जिसका अप्रत्याशित लाभ प्रतिष्ठान के समस्त आचार्यों को प्राप्त हो रहा है। विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम को उच्चकोटि का बनाने हेतु सख्त वेद में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। वेद पाठशालाओं /गुरुशिष्य परम्परा इकाइयों के वेद अध्यापकों की सेवाएँ 5 वर्ष अथवा 10 वर्ष पूर्ण होने पर मानदेय वृद्धि प्रदान किये जाने का प्रावधान है। ऐसे वेद अध्यापकों के लिये वर्ष 2024-25 में देश के विभिन्न स्थानों पर निम्नानुसार पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किये गये :

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (Refresher Course) प्रशिक्षण आयोजित (17 से 31 मई, 2024)

क्र.	प्रशिक्षण का स्थान	वेदशाखा
1.	श्री स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय, श्री परमानन्द आश्रम ट्रस्ट, पोस्ट नर्झ झूंसी, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)	शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखा
2.	स्वामी वेदान्ती वेदविद्यापीठ श्री रामानन्द विश्वहितकारिणी परिषद बी 24/19 काश्मीरीगंज गुरुधाम कालोनी वाराणसी (उ.प्र.)	शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखा
3.	श्री गुरु शङ्कराचार्य वेदविद्यालय समिति, ग्राम नेपाली पथार, पोस्ट गमिरि जिला शोणितपुर- (असम)	शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनशाखा

4.	वेदस्थली शोध संस्थान, 12 मातृ प्रासाद शरद विहार कालोनी अवधूत मण्डल के सामने ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	सामवेद
5.	महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) के परिसर में	अथर्ववेद

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (Refresher Course) प्रशिक्षण आयोजित (8 से 22 जून 2024)

क्र.	प्रशिक्षण का स्थान	वेदशाखा
1.	श्री राजराजेश्वरी वेदगुरुकुलम् पोस्ट मठादेवला, सिरसी स्वर्णवल्ली, कर्नाटक- 581336	ऋग्वेद शाकल शाखा
2.	गौराङ्ग वेद विद्यालय, ग्राम बारुली, पोस्ट दक्षिण गोविन्दपुर, जिला दक्षिण 24 परगना कोलकाता- 700145 (पश्चिम बंगाल)	शुक्लयजुर्वेद काण्व शाखा
3.	श्री गणपति सच्चिदानन्द आश्रम दत्त नगर, ऊटी रोड, मैसूर, कर्नाटक	कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयशाखा
4.	दर्शनम् वेद विद्यालय, श्री स्वामी नारायण गुरुकुल, विश्वविद्या प्रतिष्ठान सी.जी.वी.पी. हाईवे, छारोडी, अहमदाबाद 382481 (गुजरात)	शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा संचालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, द्वारका हेतु भूमि प्राप्त

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, भारत सरकार शिक्षा मन्त्रालय की स्वायत्तशासी संस्था है। भारत सरकार के शिक्षा, कौशल विकास, उद्यमिता माननीय मन्त्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष महोदय जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, द्वारका हेतु गुजरात सरकार द्वारा दिनांक 06 जून 2024 को 26 एकड़ भूमि हस्तान्तरित की गई। भवन निर्माण से सम्बन्धित कार्यप्रगति पर है।

प्रतिष्ठान पूरक परीक्षा कार्यक्रम

2023-24 में वेदपाठशाला एवं गुरुशिष्य परम्परा योजना एवं बाह्य परीक्षा प्रणाली में अध्ययनरत छात्रों को वेद एवं आधुनिक विषयों की पूरक परीक्षा हेतु विभिन्न केन्द्रों पर वेदभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 6वीं) से वेदभूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा 10वीं) एवं वेद-विभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 11वीं) तथा प्रतिष्ठान परिसर में वेद-विभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा 12वीं) की परीक्षा दिनांक 03.07.2024 से 07.07.2024 तक आयोजित की गई है। इन परीक्षाओं में 1400 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। विविध विश्वविद्यालयों महाविद्यालयों ने उच्च कक्षा में प्रवेश हेतु प्रतिष्ठान की इन परीक्षाओं को समकक्ष मान्यता प्रदान की है।

सरकारी उपलब्धि एवं योजना एक्सपो- 2024

भारत सरकार के निर्देशानुसार दिनांक 20 - 22 जुलाई, 2024 को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित सरकारी उपलब्धि एवं योजना एक्सपो- 2024 में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन ने भाग लिया था। प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों, शोधपत्रिका, वेदनिषुण और यज्ञपात्रादि प्रदर्शन दर्शाया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठान को "वैदिक अध्ययन के विकास में उत्कृष्टता" के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रतिष्ठान की ओर से प्रतिनिधि रूप में श्री लवी त्यागी, सहायक निदेशक, डॉ. अनूप कुमार मिश्र, सहायक निदेशक, श्री सौरभ नौटियाल, डॉ. शम्भुनाथ मण्डल, श्री प्रिन्स वर्मा, श्री अंकित उपस्थित रहे।



वेद कक्षा वार्षिकोत्सव

दिनांक 27 जुलाई 2024, श्रावण कृष्ण सप्तमी, शनिवार को प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित सासाहिक "सभी के लिए वेद कक्षा" का पाँचवा वार्षिकोत्सव प्रतिष्ठान के पुराने परिसर उज्जैन विकास प्राधिकरण, द्वितीय तल, उज्जैन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. विजय कुमार सी.जी., कुलगुरु, म.पा.सं.वै.विवि, उज्जैन, विशिष्ट अतिथि प्रो. केदार नारायण जोशी, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन तथा अध्यक्षता के रूप में प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरुद्धपाल वि. जड्हीपाल, सहायक निदेशक डॉ. अनूप कुमार मिश्र ने कार्यक्रम का संचालन किया और प्रतिष्ठान के अधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापक एवं छात्रगण उपस्थित रहे।



78वाँ स्वतन्त्रता दिवस समारोह- 2024

78वाँ स्वतन्त्रता दिवस प्रतिष्ठान परिसर में अंतीव उत्साह के साथ मनाया गया। प्रतिष्ठान के सभी अधिकारियों-कर्मचारियों ने प्रसन्नतापूर्वक इस पावन राष्ट्रीय पर्व में भाग लिया। प्रतिष्ठान के सहायक निदेशक डॉ. अनूप कुमार मिश्र ने कार्यक्रम का सञ्चालन किया। इस अवसर पर डॉ. नारायण होस्मने (सहायकाचार्य, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, राजस्थान) ने अपने वक्तव्य में कहा कि वेद भारतीय ज्ञान परम्परा का आधार है। सचिव महोदय ने अपने उद्घोषण में कहा कि सर्वप्रथम संविधान की प्रस्तवना में वेद का ज्ञान निहित है। समग्र भारत देश के समृद्धि के लिए वेद अध्ययन की श्रुति परम्परा का, मौखिक परम्परा का संरक्षण, संवर्धन तथा विकास होना आवश्यक है। विश्व चेतना विकास का मार्ग तभी खुलेगा जब सृष्टि के सर्वप्राचीन ज्ञान-विज्ञान का आदि स्रोत, वेदों का अध्ययन अध्यापन का विकास होगा। इस सुअवसर पर प्रतिष्ठान के अधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापक एवं छात्रगण उपस्थित रहे।



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान का ३८वाँ स्थापना दिवस समारोह २०२४

प्रतिष्ठान परिसर में श्रावण शुक्ल पूर्णिमा दिनांक १७ से १९ अगस्त, २०२४ को ३८वाँ स्थापना दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिष्ठान परिसर में १३ से १९ अगस्त, २०२४ तक ऋग्वेद शाकलशाखा पारायण, १५-१९ अगस्त, २०२४ तक अन्य वेद शाखाओं का पारायण तथा दिनांक १७ से १९ अगस्त, २०२४ तक विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

दिनांक १६ अगस्त, २०२४ को ३८वाँ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिष्ठान द्वारा उज्जैन में शोभायात्रा त्रिपुर सुंदरी आश्रम से त्रिवेणी संग्रहालय के सामने वाहन पार्किंग तक ४०० वेद वटुकों के साथ वेद सन्देश यात्रा निकाली गयी। इस यात्रा में चारधाम मन्दिर के महामण्डलेश्वर परमपूज्य स्वामी शांतिस्वरूपानन्दजी महाराज, डॉ. सदानन्द त्रिपाठी, प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्हीपाल, तथा प्रतिष्ठान के अधिकारी तथा कर्मचारी, राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापकों एवं छात्रों ने सहभागिता की।

दिनांक १७ अगस्त २०२४ को प्रातः ९.३० से १२ बजे तक चतुर्वेद वेदान्त्याक्षरी प्रतियोगिता और अपराह्न ३ से ५.३० बजे तक चतुर्वेद शलाका प्रतियोगिता राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित एवं पूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय के प्रो. केदार नारायण जोशी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। १८ अगस्त २०२४ को सुबह १० बजे से वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रो. केदार नारायण जोशी की अध्यक्षता और डॉ. सदानन्द त्रिपाठी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित की गई। प्रतियोगिता में राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय उज्जैन, गुवाहाटी, द्वारका, पुरी तथा स्थानीय वेद विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। १९ अगस्त २०२४ को प्रातः उपार्कर्म कार्य के उपरान्त पुरस्कार एवं सम्मान समारोह में प्रो. विजयकुमार मेनन, कुलगुरु, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विवि मुख्य अतिथि थे। प्रो. केदार नारायण जोशी सारस्वत अतिथि, डॉ. सदानन्द त्रिपाठी अतिथि, प्रतिष्ठान सचिव प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्हीपाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रतिष्ठान सचिव ने प्रतिष्ठान के ३८ वर्ष के विकास यात्रा का परिचय प्रस्तुत किया। इस समारोह में सभी स्पर्धाओं में भाग लेने वाले वटुकों में से ७२ विजेताओं को प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित वेद कल्पतरु, ग्रन्थ, अङ्गवस्त्र प्रदान किया गया। राशि का वितरण वटुकों के खाते में प्रेषित किया गया। कार्यक्रम में प्रतिष्ठान के अधिकारी, कर्मचारी, अध्यापक एवं वटुक उपस्थित थे। सञ्चालन सहायक निदेशक डॉ. अनूप कुमार मिश्र ने किया और धन्यवाद ज्ञापन सौरभ नौटियाल द्वारा दिया गया।



राजभाषा हिन्दी दिवस समारोह

हिन्दी भाषा, शासन और जनता के बीच सेतु का काम करते हुए अधिकाधिक जन-भागीदारी सुनिश्चित कराती है। यह सर्वविदित है कि राष्ट्र के नव-निर्माण में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतन्त्रता के पश्चात दिनांक 14 सितम्बर, 1949 को हमारी संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था तभी से इस दिन को हम “हिन्दी दिवस” के रूप में मनाते हैं।

विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रतिष्ठान में दिनांक 14 सितम्बर 2024 को हिन्दी दिवस एवं दिनांक 16 से 30 सितंबर, 2024 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत प्रतिष्ठान एवं रा.आ.वे.वि उज्जैन के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अध्यापकों हेतु दिनाङ्क 17.09.2024 को हिन्दी निकंध प्रतियोगिता, दिनाङ्क 20.09.2024 को हिन्दी भाषण प्रतियोगिता, दिनाङ्क 25.09.2024 को हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के विद्यार्थियों हेतु दिनाङ्क 26.09.2024 को कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में डॉ. नेत्रा रावणकर एवं हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता में श्री सन्तोष सुपेकर निर्णयक के रूप में उपस्थित रहे। इसी अनुक्रम में दिनांक 27.09.2024 को “हमारी राजभाषा हिन्दी” विषय पर हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 30 सितम्बर 2024 को 4:00 बजे (अपराह्न) ऐतरेय भवन के सभागार में किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि प्रो. गीता नायक जी तथा प्रतिष्ठान के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के अध्यापक एवं कर्मचारीगण की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।



स्वच्छता अभियान

दिनांक 17 सितम्बर से 01 अक्टूबर, 2024 तक स्वच्छता ही सेवा अभियान-2024 के सम्बन्ध में। शिक्षा मन्त्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, नई दिल्ली के पत्र क्र. 11014/03/2024-EBSB दिनांक 16-08-2024 के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी की जयन्ती पर उन्हें श्रद्धाञ्जलि देने के लिए “स्वच्छ भारत दिवस” के रूप में मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में दिनांक 14 सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2024 तक “स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता” थीम पर स्वच्छता ही सेवा अभियान-2024 मनाया गया। अभियान के अन्तर्गत तीन मुख्य स्तम्भ हैं:-

1. स्वच्छता की भागीदारी,
2. सम्पूर्ण स्वच्छता,
3. सफाई मित्र सुरक्षा शिविर



इस पखवाड़े के दौरान दिनांक 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2024 तक प्रतिदिन 1:30 घण्टे (समय सायं 4:00 से 5:30 तक) कार्य नामित अधिकारी/कर्मचारीगण के साथ उनके निर्देशन में स्वच्छता कार्य किया गया। उक्त कार्यक्रम में प्रतिष्ठान के समस्त अधिकारी, कर्मचारी एवं राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के समस्त अध्यापक, कर्मचारी, छात्रगण सम्मिलित हुये। साथ ही डॉ. हेमन्त जारवाल ने प्रतिष्ठान के सफाई एवं माली भाइयों को स्वच्छता को समुचित रूप से बनाये रखने के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान किया।



स्वास्थ्य केन्द्र

प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन में अध्ययनरत छात्रों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए स्वास्थ्य केन्द्र प्रारम्भ किया गया है। आरुणि छात्रावास में प्रतिदिन प्रातः: एवं सायं काल डॉ. हेमन्त जारवाल (बी.ए.एम.एस., चिकित्सक सलाहकार) छात्रों के रोग निवारण स्वास्थ्य जाँच करने के उपरान्त रोगयुक्त छात्रों को औषधि प्रदान करते हैं। छात्रों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिये प्रत्येक वेदशाखा के अध्यापक समय-समय पर उपस्थित रहकर आवश्यकतानुसार अपना सहयोग प्रदान करते हैं।



प्रतिष्ठान परिसर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन द्वारा आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), उज्जैन द्वारा दिनांक 18 अक्टूबर 2024 को विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के परिसर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिष्ठान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित नराकास, उज्जैन के अन्तर्गत आने वाले केन्द्र सरकार के 33 कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारीगण ने उत्साह, लगन एवं अतीव मनोयोग से सहभागिता की।

आयोजन के अन्तर्गत संस्कृत श्लोक वाचन, राजभाषा प्रश्नोत्तर, शब्द ज्ञान तथा काव्य पाठ जैसी विविध प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। संस्कृत श्लोक वाचन प्रतियोगिता के आयोजन का उत्तरदायित्व महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान को प्रदान किया गया था। संस्कृत श्लोक वाचन प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में प्रतिष्ठान के माननीय पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र उपस्थित रहे। उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए संस्कृत भाषा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता तथा भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परम्परा में उसकी अमूल्य भूमिका पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए।



अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन

वेदस्थली शोध संस्थान, हरिद्वार

प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में वैदिक सम्मेलनों का महत्वपूर्ण स्थान है और ये सम्पूर्ण देश में वैदिक अध्ययन और ज्ञान के प्रचार के प्रमुख साधन हैं। सम्मेलन आयोजक के रूप में उत्कृष्ट वैदिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, विद्यापीठों आदि के सहयोग से सम्पन्न किये जाते हैं। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा प्रतिवर्ष सम्पूर्ण देश में वेद के प्रचार एवं प्रसार को ध्यान में रखकर छह क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन, उत्तर पूर्व राज्य में एक क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन, एक अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। देश के युवा एवं प्रतिष्ठित वेदपाठी, मूर्धन्य वेद मनीषी इन सम्मेलनों में भाग लेते हैं।



दिनांक 15 से 17 नवम्बर 2024 तक वेदस्थली शोध संस्थान, सुरत गिरि बंगला, सन्न्यास मार्ग, कनखल, हरिद्वार तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन में सम्पूर्ण देश से आगत लगभग 125 वैदिक विद्वानों द्वारा समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया गया।

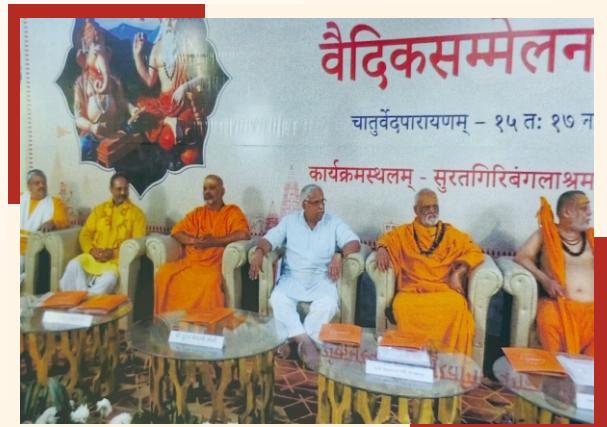
प्रथम दिवस - वेद सन्देश यात्रा

अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन दिनांक 15 नवम्बर 2024 को वेद की रक्षा देश की रक्षा, वेद पढ़ाओ देश बचाओ, ग्रामे ग्रामे नगरे नगरे वेद उद्घोष के साथ 500 वैदिक विद्वानों ने सन्न्यास मार्ग होते हुए शङ्कराचार्य चौक पर गए तथा वहां पर आद्य गुरु शङ्कराचार्य का पूजन के साथ माल्यार्पण किया गया। वहां से शोभायात्रा ने सिद्धपीठ सुरत गिरि बंगला, सन्न्यास मार्ग, कनखल सभागार में मंगल कलश के साथ प्रवेश किया। स्काउट गाइड एवं वेद अध्ययन करने वाले बटुक शोभायात्रा का विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। स्काउट गाइड के छात्रों का महाराज श्री एवं प्रतिष्ठान के सचिव ने स्वागत किया।



उद्घाटन एवं शुभारम्भ

श्री 1008 महामण्डलेश्वर आचार्य स्वामी विश्वेश्वरानन्द गिरिजी महाराज ने सर्वप्रथम ऋग्वेदीय वैदिकों का चन्दन, पुष्टमाला, शौल दक्षिणा से पूजन किया तत्पश्चात् प्रो. विरुद्धपाल वि. जड्हीपाल, सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के द्वारा क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद काण्व शाखा के वैदिकों का सम्मान किया गया। तत्पश्चात् इसी अनुक्रम में श्री संजय श्रीवास्तव, सहायक निदेशक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के द्वारा शुक्ल यजुर्वेद, कृष्ण यजुर्वेद के वैदिकों का चन्दन माल्यार्पण किया गया। सामवेद अथर्ववेद के वैदिकों का सम्मान किया गया। विद्यालय के आचार्य बालकृष्ण त्रिपाठी एवं अन्य सभी आचार्यों का सम्मान हुआ। ऋग्वेद के प्रथम अष्टक सम्पूर्ण एवं द्वितीय अष्टक 1 अध्याय, यजुर्वेद 8 से 12 अध्याय, कृष्ण यजुर्वेद चतुर्वेद पारायण क्रमशः प्रारम्भ हुआ स्तरीय 13 से 24 प्रश्न तक, सामवेद 4 प्रपाठक से पूर्वार्चिक समाप्ति तक पृष्ठती से इन्द्रपुच्छपर्यन्त, अथर्ववेद के 4 से 6 काण्डों का क्रमशः वेद पारायण किया गया।



प्रथम सत्र में प्रातः: 11.00 बजे वैदिक मङ्गलाचरण के साथ विशिष्ट अतिथियों द्वारा द्वीप प्रज्वलन के उपरान्त अध्यक्षता के रूप में श्री 1008 महामण्डलेश्वर आचार्य स्वामी विश्वेश्वरानन्द गिरि जी के पावन सान्निध्य रूप में परमपूज्य जगद्गुरु स्वामी श्री राजराजेश्वराश्रम जी महाराज, मुख्य अतिथि के रूप में श्रद्धेय श्री सुरेश भैया जोशी जी, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. गणेश उमाकान्त थिटे एवं डॉ. चिन्मय पण्ड्या, मुख्य वक्ता के रूप में प्रतिष्ठान के पूर्व सचिव प्रो. श्रीकिशोर मिश्र तथा वर्तमान सचिव प्रो. विस्तुपाक्ष वि. जड्हीपाल उपस्थित रहे।

द्वितीय सत्र में मध्याह्न 2.30 बजे मुख्यातिथि जम्मू और कश्मीर राज्य के महामहिम उपराज्यपाल माननीय श्री मनोज सिन्हा जी, विशेष उपस्थिति परम पूज्य महामण्डलेश्वर 1008 स्वामी श्री नित्यानन्द महाराज जी तथा स्वामी श्री रवीन्द्र पुरी जी महाराज, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. विस्तुपाक्ष वि. जड्हीपाल, अति विशिष्टातिथि के रूप में श्री दीपक गैरोला जी उपस्थित रहे।

देव दीपावली का सांस्कृतिक कार्यक्रम

तृतीय सत्र सायंकाल में गंगा तट पर सायंकालीन 04 बजे से देव दीपावली महोत्सव का अयोजन किया गया। श्री गंगा तट पर लाख दीपक जलाने के लक्ष्य से छात्रों ने दीपक एकत्र कर दीप प्रज्वलन किया। दीपकों से प्रकाशमान श्री गंगा तट पर गंगा आरती में सभी वैदिकों, श्री श्री मां आनन्दमई आश्रम से आयी हुई गीता दीदी एवं विद्यापीठ की कन्याओं ने भजन एवं संकीर्तन प्रस्तुत किया तथा गंगा तट पर प्रो. विस्तुपाक्ष वि. जड्हीपाल, सचिव, म.सा.रा.वे.वि.प्र. श्री गंगा आरती में उपस्थित रहे। श्री गंगा आरती में सचिव महोदय ने अपने उद्घोषण में कहा कि श्री गंगा स्वच्छता हेतु 15 दिन का विशेष स्वच्छता अभियान चलाना चाहिये।

द्वितीय दिवस

विशिष्टातिथि के रूप में श्री महामहिम राज्यपाल लेफिटनेंट जनरल गुरमीत सिंह जी (से. नि.) उत्तराखण्ड पधारे। माननीय राज्यपाल महोदय ने सम्पूर्ण भारतवर्ष से आए वैदिक विद्वानों के वेदमंत्रों का श्रवण किया तथा माननीय राज्यपाल जी का सम्मान सभी अतिथियों द्वारा किया गया। परमाध्यक्ष परमपूज्य 1008 महामण्डलेश्वर आचार्य श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द गिरि महाराज जी, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने भारत की विभिन्नता के बारे में बताते हुए कहा कि विभिन्नता में एकता का कारण वेद हैं। प्रो. श्रीकिशोर मिश्र ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कहा कि भारतीय परम्परा का मूल ओड़कार है, सबसे प्राचीन भाषा ऋग्वेद की भाषा है। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. विस्तुपाक्ष वि. जड्हीपाल ने कहा कि वेद की रक्षा, देश की रक्षा है। वेद भाषा का प्रसार होता है तो आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक शान्ति का सर्वत्र प्रसार होता है। महामहिम राज्यपाल से वेद सेवा हेतु उत्तराखण्ड में 25 एकड़ भूमि के लिए आश्वासन मांगा। आचार्य बालकृष्ण जी ने कहा जीवन को जीने के लिए जितने विज्ञान, कौशल चाहिए वह शास्त्रों में वर्णित हैं। सनातन संस्कृति आत्म साधना से राष्ट्र आराधना के लिए कहती है।

व्याख्यान सत्र

व्याख्यान सत्र में अध्यक्षता के रूप में परम पूज्य महामण्डलेश्वर 1008 स्वामी श्री नित्यानन्द जी ने व्याख्यान में अपने अनुभवों से गुरुकुल की आवश्यकता का वर्णन किया एवं सभी संस्थाओं को गुरुकुलों की व्यवस्था करने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि डॉ. अमरनाथ रेण्डी ने राष्ट्र उत्थान के लिए सभी के योगदान का महत्व समझाया एवं बताया कि किसी मन्त्र के शोध में पूरा जीवन भी छोटा प्रतीत



होता है। मुख्य वक्ता प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र ने मनुष्य के विभिन्न बन्धनों का वर्णन किया एक बन्धन माता पिता का होता है और एक बंधन आत्मा का परमात्मा से होता है। अतिविशिष्ट अतिथि प्रो. गणेश उमाकान्त थिटे ने संस्कृत भाषा एवं वेदाध्ययन में आश्रम के योगदान का महत्व बताया और कहा कि सृष्टि के विस्तार में ब्रह्मा जी वेदों का स्मरण चिन्तन मनन करते हैं, उन्होंने कर्मों का विभेद एवं श्रेष्ठ कर्म की व्याख्या कर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया।

तृतीय दिवस

समापन सत्र में पावन सन्निधि परम पूज्य 1008 महामण्डलेश्वर स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज मथुरा, अध्यक्षता के रूप में परम पूज्य 1008 महामण्डलेश्वर आचार्य श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द गिरि जी महाराज, मुख्यातिथि के रूप में परम पूज्यस्वामी रवीन्द्र पुरी जी महाराज, अध्यक्ष अखाडा परिषद, अति विशिष्टातिथि प्रतिष्ठान सचिव प्रो. विश्वपाक्ष वि. जड्हीपाल उपस्थित थे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ।



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के अन्तर्गत श्रीजगन्नाथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, पुरी, ओडिशा का द्वितीय स्थापना दिवस महोत्सव

वेदों की सख्त मौखिक परम्परा के संरक्षण एवं संवर्द्धन में विगत 37 वर्षों से समर्पित महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार) द्वारा सञ्चालित श्रीजगन्नाथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, पुरी में दिनांक 04 अक्टूबर, 2024 को द्वितीय स्थापना दिवस महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में शोभा यात्रा (वेद सन्देश यात्रा) का आयोजन प्रातः 08 से 09 बजे तक श्रीजगन्नाथ मन्दिर से केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, सदाशिव परिसर तक किया गया।

तदुपरान्त प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित वेद पाठशाला एवं गुरुशिष्य परम्परा इकाई के प्रतिभागियों हेतु प्रातः 10 से अपराह्न 12 बजे तक वेदमन्त्रान्त्यक्षरी स्पर्धा का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्यातिथि प्रो. अतुल कुमार नन्द, प्रतिष्ठान के माननीय पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र, प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विश्वपाक्ष वि. जड्हीपाल तथा श्रीजगन्नाथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, वेद पाठशाला एवं गुरुशिष्य परम्परा इकाई के अध्यापक एवं छात्रगण उपस्थित रहे। इस प्रकार स्थापना दिवस समारोह का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।



क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन

प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में वैदिक सम्मेलनों का महत्वपूर्ण स्थान है जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है उसी शृंखला में प्रतिष्ठान द्वारा सहयोगी संस्था के माध्यम से कुछ क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन सम्पन्न किये जाते हैं। यह सम्मेलन जिस प्रान्त (राज्य) में होता है उसके आस-पास के राज्यों से वैदिकों को निमन्त्रित कर क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का मूल रूप दिया जाता है। अतः क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन इस प्रकार सम्पन्न किये गये।

कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन, नलबारी, असम

दिनांक 07-09 नवम्बर 2024 तक कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन, नलबारी, असम तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन नलबारी, असम में किया गया। इसमें असम, ओडिशा, बंगाल, सिकिम, त्रिपुरा तथा मणिपुर के इन छह राज्यों से लगभग 70 वैदिक गुरुओं ने समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया। प्रथम दिवस में प्रातःकाल 8 बजे सन्देश यात्रा द्वारा सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। तदुपरान्त उद्घाटन सत्र में प्रो. प्रह्लाद. आर जोशी, श्रीकृष्ण पुराणिक, प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, डॉ. वर्णाली बरठाकुर आदि उपस्थित रहे। अपराह्न में सर्व वेदपारायण तथा सायंकाल प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय द्वारा “वेदोऽखिलो धर्ममूलम्” इति विषय अधिकृत्य सरल सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

द्वितीय दिवस को प्रातःकाल में वेद सन्देश यात्रा का आयोजन किया गया। प्रातःकाल में सर्व वेदपारायण सम्पन्न हुआ तथा पूर्वाह्न में “वेदाध्ययनस्य महत्वम्” इस विषय पर असम वेद विद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री कृष्ण पुराणिक जी ने व्याख्यान दिया। अपराह्न में म्यूजिकल चेयर एवं बॉल थ्रो स्पर्धाएँ भी अनुष्ठित हुईं। सायंकाल में ऑनलाइन माध्यम से प्रतिष्ठान के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. हृदय रञ्जन शर्मा ने “वेदानां वैश्विकं महत्वम्” विषय पर आधारित व्याख्यान उपस्थापित किया।

तृतीय दिन प्रातःकाल में सर्व वेदपारायण उपरान्त “अष्टविकृतिपाठानां परिचयमहत्वमश्च” विषय पर आधारित असम वेद विद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री कृष्ण पुराणिक जी ने व्याख्यान दिया। अपराह्न समापन सत्र में प्रो. प्रह्लाद. आर जोशी, श्रीकृष्ण पुराणिक, डॉ. विकास भार्गव, डॉ. रञ्जित कुमार तिवारी आदि उपस्थित थे। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्री श्री ओङ्कारनाथदेव वेद विद्यापीठ, महामिलन मठ, कोलकाता

दिनांक 07-09 नवम्बर 2024 तक श्री श्री ओङ्कारनाथदेव वेद विद्यापीठ, महामिलन मठ, कोलकाता तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन कोलकाता में किया गया। इसमें बंगाल, असम, ओडिशा, उत्तरप्रदेश तथा मणिपुर के इन राज्यों से लगभग 100 वैदिक गुरुओं ने समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया।

प्रथम दिवस में प्रातःकाल 6.30 से 7.30 तक वेदशाखा पारायण, तदुपरान्त वेद सन्देश यात्रा महामिलन मठ से बाजार होते हुए दक्षिणेश्वर काली मन्दिर आद्या पीठ के रास्ते पुनः महामिलन मठ तक निकाली गई। तदुपरान्त उद्घाटन सत्र में प्रो. किशोरचन्द्र पाढ़ी, प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, श्री पूर्णेन्दु शेखर घोष, डॉ. शोभन भट्टाचार्य आदि उपस्थित रहे। मध्याह्न 02 बजे से 04 बजे तक सर्व वेदशाखा पारायण तथा सायंकाल में “वेदभाष्याध्ययनाध्यापनसंवर्धनोपाया:” विषय पर वैदिकविशिष्ट व्याख्यान प्रो. स्वामी सर्वोत्तमानन्दजी ने उपस्थापित किया। इसमें सत्राध्यक्ष प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी जी थे। सायंकाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए जिनमें संस्कृत नाटक की प्रस्तुति हुई।



द्वितीय दिवस प्रातःकाल में वेदशाखा पारायण, तदुपरान्त स्वामी विवेकानन्द जी की जन्मस्थली से संस्कृत कॉलेज एवं विश्वविद्यालय तक वेद सन्देश यात्रा निकाली गयी। पुनः वेदशाखा पारायण तथा सायंकाल में प्रो. किशोर चन्द्र पाढ़ी ने “लुसप्रायाणं वेदशाखानां संरक्षणोपायाः” वेद विषयों पर प्रो. शुभ्रकमल मुखर्जी ने “आधुनिककाले बङ्गप्रदेशे वेदाध्ययनस्य स्थितिः” व्याख्यान दिया। सायंकाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम “संस्कृतसङ्गीतम्” तथा “श्रीश्रीओङ्कारनाथदेवस्य जीवनचरित्रवर्णनम्” दिखाया गया।

तृतीय दिवस प्रातःकाल में सर्व वेदशाखा पारायण तथा विशेष व्याख्यान सत्र में “राष्ट्रियशिक्षानीतिः संस्कृताध्ययनम्” विषय पर डॉ. सुधाकर मिश्र तथा डॉ. तन्मय भट्टाचार्य ने व्याख्यान दिया। सम्पूर्ति सत्र में मुख्यातिथि स्वामी अभिषेक ब्रह्मचारी, रोहित सिंह जी, डॉ. सोमेशकुमारमिश्र, किशोरचन्द्र पाढ़ी, प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, श्री पूर्णन्दु शेखर घोष, डॉ. शोभन भट्टाचार्य आदि उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्री स्वामिनारायण वैदिक गुरुकुल, भुज, गुजरात

दिनांक 17-19 जनवरी 2025 तक श्री स्वामिनारायण वैदिक गुरुकुल, भुज, गुजरात तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन भुज में किया गया। इसमें गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश तथा मध्यप्रदेश के राज्यों से लगभग 100 वैदिक गुरुओं ने समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया।

प्रथम दिन में प्रातःकाल 08 बजे श्रीभगवान के सान्निध्य में प्रसादी मन्दिर के महन्त सद्गुरु पुराणी स्वामी बालकृष्ण दास जी, प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल एवं अन्य वन्दनीय सन्तवृन्द और देश-देशान्तर से पधारे गणमान्य अतिथिगण, विद्वतवर्य पण्डितजनों, भूदेवों एवं यजमानों के सान्निध्य में वेद-वेदशाखाओं की वेद सन्देश यात्रा सम्पन्न हुई और वेद-वेदशाखा ग्रन्थों का पूजन-अर्चन किया गया।

उद्घाटन सत्र में प्रातः 10.30 बजे उक्त सभी महानुभावों के दिव्य सान्निध्य में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। महामहिम राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रतजी का वैदिक मन्त्रोच्चार से स्वागत किया गया, प्रारम्भ में वैदिक छात्रों द्वारा मङ्गलाचरण एवं दीप प्रज्वलन किया। प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल ने प्रारम्भिक उद्घोषण देते हुए कहा कि “वेदों की रक्षा राष्ट्र की रक्षा है।” तत्पश्चात मा. महामहिम राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रतजी ने अपने उद्घोषण में कहा कि मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि इस दिव्य वेदपारायण में सहभागी बनने का मुझे अवसर मिला। वेद-रक्षा-राष्ट्र-रक्षा-संस्कृति रक्षा जैसे सूत्रों एवं वेद, गीता तथा उपनिषद के विविध वाक्यों का सन्दर्भ देते हुए सनातन धर्म की मूल बात पर जोर दिया है। संस्था के अध्यक्ष स्वामी धर्मनन्दनदास जी तथा स्वामी बालकृष्ण दास जी आदि उपस्थित रहे। मध्याह्न में वेद पारायण के उपरान्त विचार गोष्ठी में डॉ. सदानन्द त्रिपाठी, श्री महेश भाई ओङ्कार एवं शास्त्री विज्ञानस्वरूप दास ने वेदों के विभिन्न विषय पर व्याख्यान दिया।

द्वितीय दिन में प्रातःकाल तथा मध्याह्न में सर्व वेद पारायण के उपरान्त विचार सत्र में श्री बी.वी रामप्रिय, डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश दास, डॉ. कान्ति गौर ने व्याख्यान दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में सन्तों द्वारा भजनसन्ध्या तथा पारम्परिक कच्छी लोक सङ्गीत का आयोजन किया। तृतीय दिन प्रातःकाल में सर्व वेद पारायण के उपरान्त विचार सत्र में डॉ. कृष्णप्रसाद निरौला तथा डॉ. अमृतलाल भोगायत द्वारा वेद विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। समापन सत्र में प्रतिष्ठान के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. हृदय रञ्जन शर्मा जी (ऑनलाइन उपस्थित रहे), प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, स्वामी भगवद्जीवन दास तथा भारत राष्ट्र के रक्षक बी. एस. एफ. बोर्डर विंग कमांडो और जवानों की सविशेष उपस्थिति रही। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।



कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रत्नागिरि, महाराष्ट्र

दिनांक 07-09 फरवरी 2025 तक कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक के भारतरत्न डॉ. पाण्डुरङ्घ वामन काणे संस्कृत अध्ययन केन्द्र, रत्नागिरि, महाराष्ट्र तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन रत्नागिरि में किया गया। इस में राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा मध्यप्रदेश के राज्यों से लगभग 100 वैदिक गुरुओं ने समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया। इस अवसर पर शोभा यात्रा माधवराव मुले भवन से टिलक आली और प्रमोद महाजन क्रीडा स्कूल होते हुए रत्नागिरि शहर के मुख्य मार्ग से सम्मेलन स्थल पर सम्पन्न हुई।

उद्घाटन सत्र में रत्नागिरि जिले के जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. धनञ्जय कुलकर्णी, प्रो. गणेश उमाकान्त थिटे, प्रो. हरेराम त्रिपाठी, श्री जयन्त देसाई, डॉ. दिनकर मराठे, डॉ. अमित भार्गव आदि उपस्थित रहे। सम्मेलन के तीनों दिन में सर्व वेद शाखा का पारायण किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में शास्त्रीय संझीत, संस्कृत नाटक, गणेश वन्दना, योग विद्या प्रदर्शन आदि कलाकारों ने वाद्यवृन्द द्वारा प्रस्तुत किया। द्वितीय दिवस में महाराष्ट्र राज्य के माननीय उद्योग मन्त्री डॉ. उदय सामन्तजी, प्रो. अम्बरीष खरे, कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी आदि उपस्थित थे। तृतीय दिवस दिनांक 9 फरवरी 2025 को सभी वैदिकों ने प्रातः श्री क्षेत्र गणपति फुले संस्थान में जाकर गणराय के दर्शन किए और समुद्रतट पर स्थित मंदिर प्राङ्गण में चारों वेदों का सामूहिक पारायण किया, साथ ही अर्थवर्शीर्ष का आवर्तन भी किया। समापन समारोह में प्रो. हरेराम त्रिपाठी, डॉ. विवेक भिडे, डॉ. दिनकर मराठे, डॉ. अमित भार्गव आदि उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।



वेद विज्ञान महाविद्या पीठ, श्री श्री गुरुकुलम् श्री श्री विश्वविद्यालय, कटक, ओडिशा

दिनांक 21-23 फरवरी 2025 तक वेद विज्ञान महाविद्या पीठ, श्री श्री गुरुकुलम् श्री श्री विश्वविद्यालय, कटक, ओडिशा तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें ओडिशा, पश्चिमबङ्ग, बिहार, झारखण्ड, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा मध्यप्रदेश के राज्यों से लगभग 100 वैदिक गुरुओं ने समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया।

प्रथम दिन में प्रातःकाल कटक शहर में शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में श्रीमती रजिता कुलकर्णी, स्वामी हरिहरजी, स्वामी सत्य चैतन्यजी, श्री गङ्गाधर पण्डा, श्री उमाकान्त सामन्त आदि उपस्थित रहे। तदुपरान्त चतुर्वेद पारायण किया गया। सायंकाल में “आधुनिक भारत में वेदों का अध्ययन क्यों करना चाहिए?” विषय पर प्रतिष्ठान के पूर्व माननीय उपाध्यक्ष प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र जी ने व्याख्यान दिया। द्वितीय दिवस में चतुर्वेद पारायण किया गया।

तदुपरान्त सायंकाल में “वेदों में प्रशासनिक व्यवस्था” विषय पर प्रो. गोपाल कृष्ण दाश तथा श्री मातृ प्रसाद मिश्र द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया। तृतीय दिवस में चतुर्वेद पारायण उपरान्त प्रो. शनुष्ठ पाणिग्राही तथा स्वामी सत्य चैतन्यजी ने “वेदों में विज्ञान” विषय पर व्याख्यान दिया। समापन सत्र में माननीय सांसद श्री प्रताप षड्जीजी, प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरुद्धपाल वि. जड्हीपाल, श्रीमती रजिता कुलकर्णी, स्वामी सत्य चैतन्यजी आदि उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।



श्री व्यास संस्कृत महाविद्यालय, रघुनाथपुर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश

दिनांक 22 से 24 फरवरी 2025 तक श्री व्यास संस्कृत महाविद्यालय, रघुनाथपुर, कुल्लू तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन में उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली तथा राजस्थान राज्यों से लगभग 100 वैदिक विद्वानों ने समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया।

प्रथम दिन उद्घाटन कार्यक्रम में प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, कुल्लू के राजा श्रीमान महेश्वर सिंह, डॉ. ओम कुमार शर्मा, स्वामी माधवानन्द, डॉ. जयप्रकाश द्विवेदी आदि उपस्थित रहे। सम्मेलन के तीनों दिन सर्व वेद शाखा का पारायण किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति प्रस्तुत की गयी जिसमें प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी ने अध्यक्षता की। द्वितीय दिवस प्रातःकाल में वेद सन्देश यात्रा निकाली गयी। स्वल्पाहार के बाद में चतुर्वेद पारायण किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रो. मुरली मनोहर पाठक ने अध्यक्षता की।

तृतीय दिवस प्रातःकाल में योग अभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कुछ वेदपाठियों, छात्रों तथा अन्य स्थानीय लोगों ने भी भाग लिया। योग कक्षा का सञ्चालन प्रो. रमेश ने किया। समापन सत्र में प्रो. मुरली मनोहर पाठक, डॉ. ओम कुमार शर्मा, स्वामी माधवानन्द आदि उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्री वेङ्कटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश

दिनांक 17 से 19 मार्च 2025 तक श्री वेङ्कटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन में आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल तथा महाराष्ट्र राज्यों के वैदिक विद्वानों ने समवेत स्वर में वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया।

प्रथम दिवस उद्घाटन कार्यक्रम में श्री श्री शङ्कर विजयेन्द्र सरस्वती जी (आनलाइन माध्यम से), प्रो. राणी सदाशिव मूर्ति, प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, प्रो. जी. एस. आर. कृष्णमूर्ति आदि उपस्थित रहे। “वैदिक परम्परा का प्रभावी प्रचार-प्रसार, समकालीन समाज में उसकी प्रासंगिकता” विषय पर श्री कुप्प शिवसुब्रह्मण्य अवधानी तथा श्री वंशीकृष्ण घनपाठी जी ने व्याख्यान दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत शास्त्रीय सङ्गीत, नृत्य प्रदर्शन, वाद्यवृन्द आदि कलाकारों द्वारा प्रस्तुति की गयी।

द्वितीय दिवस प्रातःकाल में वेदशाखा पारायण उपरान्त डॉ. सदानन्द त्रिपाठी ने “वेदों और उपनिषदों में ज्ञान” तथा आचार्य जी. श्रीनिवास ने “वैदिक शिक्षा तथा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था” विषय पर व्याख्यान दिया।

समापन सत्र में श्री जी. भानु प्रकाश रेड्डी, प्रो. राणी सदाशिव मूर्ति, प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, कुलसचिव प्रो. पि. भास्करुडु, प्रो. तारकराम शर्मा, डॉ. गणेश प्रसाद भट्ट आदि उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।



अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठियाँ

प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में वैदिक संगोष्ठियों का महत्वपूर्ण स्थान है और ये सम्पूर्ण देश में वैदिक अध्ययन और ज्ञान के प्रचार के प्रमुख साधन हैं। प्रतिवर्ष अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं। उद्घाटन और समापन समारोह के साथ ये संगोष्ठियाँ दोदिवसीय / त्रिदिवसीय आयोजित होती हैं। इस संगोष्ठी में आयोजक के रूप में उत्कृष्ट वैदिक संस्थाएं, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आदि भाग लेते हैं। वैदिक अध्ययन के क्षेत्र में अनुसन्धान के प्रोत्साहन के लिए प्रतिष्ठान द्वारा प्राथमिकता के क्षेत्रों में संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं। ये संगोष्ठियाँ प्रतिष्ठान द्वारा पूर्ण अथवा आंशिक रूप से वित्तपोषित की जाती हैं। वर्ष 2024-25 में प्रतिष्ठान द्वारा इस प्रकल्प हेतु विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त प्रस्तावों में से प्रतिष्ठान की परियोजना समिति ने 7 अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठियों का आयोजन करने की स्वीकृति प्रदान जिसका विवरण इस प्रकार है -

संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तरप्रदेश

दिनांक 15-17 अक्टूबर 2024 तक संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तरप्रदेश तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में “वैदिकसंस्काराणां साम्प्रतिकी उपयोगिता” विषय पर अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उद्घाटन सत्र में प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रो. रामसेवक दुबे, प्रतिष्ठान के पूर्व सचिव प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेयः, प्रो. सर्वनारायण झा, डॉ. अमलधारी सिंह जी उपस्थित रहे। विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता प्रो. आशुतोष मिश्र, प्रो. रामसुमेर यादव, सदाकान्त शुक्ल द्वारा की गई। समापन सत्र में प्रो. संगीता साहू, प्रो. मनोज कुमार मिश्र, प्रो. राजेश्वरप्रसाद मिश्र, प्रो. वाचस्पति मिश्र आदि उपस्थित थे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।



संस्कृत विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश

“वैदिक वाङ्मय में विज्ञान” के विविध आयामों पर गहन विचार विमर्श के लिए इस त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी का आयोजन प्रतिष्ठान तथा संस्कृत विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 12-14 नवम्बर 2024 तक किया गया। उद्घाटन समारोह में प्रो. जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति, प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), प्रो. गणेशी लाल सुथार, प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र, डॉ. अमलधारी सिंह, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी उपस्थित रहे। प्रो. मिश्रीलाल, प्रो. हनुमान मिश्र, डॉ. सदानन्द त्रिपाठी, प्रो. धर्मेन्द्र कुमार सिंह देव, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, प्रो. ए.पी. मिश्र ने भिन्न-भिन्न सत्रों में अध्यक्षता की। समापन समारोह में प्रो. विजय कुमार सी जी, प्रो. रहसविहारी द्विवेदी, डॉ. सञ्जय कुमार आदि उपस्थित थे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।



श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, कुशीनगर, उत्तरप्रदेश

दिनांक 18-20 नवम्बर 2024 तक श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, कुशीनगर, उत्तरप्रदेश तथा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में “वेदोपवेद एवं तन्मूलक भारतीय चिन्तन” विषय पर अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में प्रो. जयप्रकाश नारायण द्विवेदी, प्रतिष्ठान के पूर्व सचिव प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय, आचार्य सुशील दुबे, प्रो. मनोज कुमार मिश्र, प्रो. देवेन्द्र नाथ पाण्डेय, प्रो. प्रकाश पाण्डेय ने विषयानुरूप अपने अपने विचार व्यक्त किये। प्रो. महेन्द्र पाण्डेय, डॉ. लक्ष्मी मिश्रा, प्रो. मार्कण्डेय नाथ तिवारी, डॉ. रामनारायण त्रिपाठी, प्रो. विनय कुमार पाण्डेय, प्रो. सुभाष पाण्डेय प्रभृति समादरणीय सत्राध्यक्षगण उपस्थित थे। समापन समारोह में प्रो. मुरलीमनोहर पाठक कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नईदिल्ली की अध्यक्षता रही एवं पूर्व सांसद माननीय श्री राजेश पाण्डेय जी तथा ख्यातिलब्ध प्रो. विनय कुमार पाण्डेय जी आदि उपस्थित थे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।



केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, एकलव्यपरिसर, अगरतला, त्रिपुरा

“भारतीयज्ञानपरम्परासम्बन्धने वेदानां योगदानम्” विषय आधारित प्रतिष्ठान तथा वेद कर्मकाण्ड पौरोहित्य विद्याशाखा, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, एकलव्यपरिसर, अगरतला, त्रिपुरा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 29-31 जनवरी 2025 पर्यन्त आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रो. रत्नकुमार साहा, प्रतिष्ठान के पूर्व सचिव प्रो. श्रीकिशोर मिश्र, प्रो. मनोज कुमार मिश्र, प्रो. राजेन्द्रनाथ शर्मा, प्रो. प्रभात कुमार महापात्र आदि उपस्थित थे।



विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता प्रो. कामेश्वर शुक्ल, प्रो. रवीन्द्रनाथ भट्टचार्य, प्रो. मञ्जुला देवी, प्रो. जगदीश शर्मा, प्रो. शङ्करनाथ तिवारी, डॉ. सुमन के एस द्वारा की गई। समापन सत्र में प्रतिष्ठान के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. हृदय रञ्जन शर्मा, श्री देवारीष नन्दी, प्रो. योगेश प्रताप सिंह, प्रो. आनन्द मिश्र, प्रो. अवधेश कुमार चौबे उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

प्रतिष्ठान तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत, पालि तथा प्राकृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में “वेदेषु विकसितराष्ट्रस्य सङ्कल्पना : वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये” विषय पर दिनांक 13-15 फरवरी 2024 पर्यन्त आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय शिक्षा राज्यमन्त्री माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं विशिष्ट अतिथि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा जी, मुख्य वक्ता राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान प्रो. मान सिंह जी उपस्थित थे। प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र, प्रो. जगदीश सेमवाल, प्रो. बलवीर आचार्य, प्रो. रितु बाला, प्रो. वीरेन्द्र



अलंकार , प्रो. अरविन्द, प्रो. ललित कु. गौड, प्रो. चितरंजन दास कौशल, प्रो. भगत सिंह, प्रो. अनामिका, प्रो. उषा, प्रो. शुचि स्मिता आदि ने भिन्न-भिन्न सत्रों में अध्यक्षता की। समापन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ वीरेन्द्र पाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृत विभाग की अध्यक्षा ने की। संगोष्ठी का प्रतिवेदन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. कृष्णा आर्य ने प्रस्तुत किया। समापन कार्य का सञ्चालन संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान के सहायकाचार्य डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने किया। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।



श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

ज्ञानप्रवाह तथा श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिष्ठान द्वारा “वेदोपाङ्गं नव्यन्यायशास्त्रम्” विषय पर समायोजित्यमाण दिनांक 26-28 फरवरी 2024 पर्यन्त त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्रौतेष्टि प्रयोग कार्यक्रम में मुख्यातिथि प्रतिष्ठान के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. हृदय रङ्गन शर्मा जी, उद्घाटन समारोह में प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी, प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल, प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र, प्रो. वि. रामकृष्ण भट्ट, श्रीमती विमला पोद्दार, प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा जी उपस्थित थे। विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता प्रो. आनन्द कुमार श्रीवास्तव, प्रो. करुणानन्द मुखोपाध्याय, प्रो. मनोज कुमार मिश्र, प्रो. कामेश्वर शुक्ल द्वारा की गई। समापन समारोह में प्रो. प्रद्योत कुमार मुखोपाध्याय, प्रो. राजाराम शुक्ल, प्रो. रामपूजन पाण्डेय, प्रो. युगल किशोर मिश्र, डॉ. चन्द्रकांता राय आदि विद्वान/विदुषी उपस्थित थे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।



SASTRA मानित विश्वविद्यालय, तंजावुर, तमिलनाडु

दिनांक 09-11 जनवरी 2025 तक प्रतिष्ठान तथा प्राच्यविद्या-संशोधन विभाग, SASTRA मानित विश्वविद्यालय, तंजावुर के संयुक्त तत्त्वावधान में “वेदाङ्ग-वेदभाष्य” विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय वैदिक कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में 09 जनवरी 2025 को विभिन्न वक्ता रहे डॉ. पी. रामानुज, ब्रह्मश्री आर. मणिकण्ठ घनपाठी, डॉ. रमण शर्मा आदि उपस्थित थे। 10 जनवरी 2025 को विभिन्न सत्रों के वक्ता रहे ब्रह्मश्री आर. सुन्दरराम वाजपेययाजी, ब्रह्मश्री सेतुराम घनपाठी, वि.एस. गुरुनाथ घनपाठी।

समापन समारोह में 11 जनवरी 2025 को ब्रह्मश्री बी. सुन्दरकुमार, ब्रह्मश्री हरीश स्वामिनाथ, मातृश्री अनन्तलक्ष्मी वक्ता रहे। वैदिक कार्यशाला का पूर्ण संयोजन प्रो. वेणु गोपाल, अध्यक्ष, ओरियेन्टल स्टडीज एण्ड रिसर्च शास्त्र डीम्ड विश्वविद्यालय, तंजावुर ने किया। प्रतिष्ठान प्रतिनिधि के रूप में सहायक निदेशक डॉ. अनूप कुमार मिश्र ने राष्ट्रीय कार्यशाला में तीनों दिन उपस्थित होकर प्रतिष्ठान के वैदिक वेदाङ्ग के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका पर प्रकाश डाला। इस प्रकार त्रिदिवसीय राष्ट्रीय वैदिक कार्यशाला का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।



स्नातकोत्तर वेद विभाग, श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, ओडिशा

प्रतिष्ठान तथा स्नातकोत्तर वेद विभाग, श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी के संयुक्त तत्त्वावधान में सप्तदिवसीय “वेदानुसन्धान” विषयक राष्ट्रीय वैदिक कार्यशाला का दिनांक 21-27 मार्च 2025 तक आयोजन किया गया। दिनांक 21.03.2025 को श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी के अधिष्ठ भवन सभागार में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर प्रसन्न कुमार स्वार्ड जी तथा अन्यान्य समागम अतिथि वृन्दों के कर कमलों से वैदिक मङ्गलाचरण, देवार्चन एवं दीप प्रज्वलन पूर्वक कार्यशाला का भव्य एवं दिव्य उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र में प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र, प्रो. बनमाली बिश्वाल, प्रो. शत्रुघ्न पाणिग्राही आदि उपस्थित थे। कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में प्रो. श्रीकिशोर मिश्र, प्रो. देवेन्द्र नाथ पाण्डेय, प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र, प्रो. गोपाल कृष्ण दाश, प्रो. प्रतिभा मञ्चरी रथ, प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र वक्ता रहे। सम्पूर्ति सत्र में प्रो. नरसिंह चरण पण्डा, प्रो. बसन्त कुमार मिश्र, तथा प्रो. जी. एस. वी. दत्तत्रेय मूर्ति उपस्थित रहे। कार्यशाला का पूर्ण संयोजन प्रो. शत्रुघ्न पाणिग्राही तथा डॉ. चन्दन कुमार मिश्र द्वारा किया गया। इस प्रकार सात दिवसीय वैदिक कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।



वेद ज्ञान सप्ताह समारोह

संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर, राजस्थान

प्रतिष्ठान तथा संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत “वेद ज्ञान सप्ताह” दिनांक 03-09 अक्टूबर, 2024 तक आयोजित किया गया। प्रथम दिवस से सप्तम दिवस पर्यन्त प्रभात फेरी एवं उद्घाटन सत्र के उपरान्त विभिन्न विभागों में वेद व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। साथ ही वेद सप्ताह के अन्तर्गत और भी विभिन्न आयोजन किये गये जैसे- प्रभातफेरी, वेद- व्याख्यान, सस्वर-वेदपाठ, वेद ज्ञान प्रश्नोत्तरी, वेद ज्ञान प्रदर्शनी (पीपीटी माध्यम से), वेद- पत्रवाचन, वेद- कालांश इत्यादि।

संस्कृत साहित्य परिषद्, कोलकाता, पश्चिमबঙ्गाल

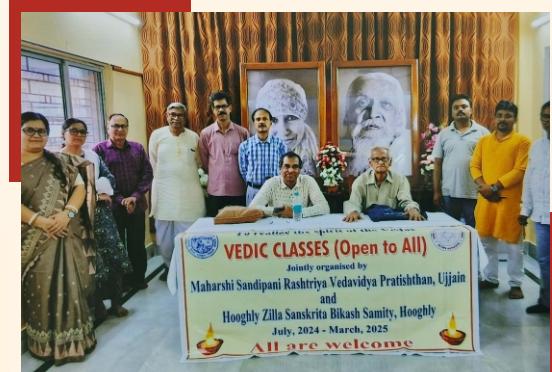
दिनांक 26 फरवरी - 04 मार्च 2025 तक प्रतिष्ठान तथा संस्कृत साहित्य परिषद्, कोलकाता के संयुक्त तत्त्वावधान में “वेद ज्ञान सप्ताह” का आयोजन किया गया।



सभी के लिए वैदिक कक्षाएँ

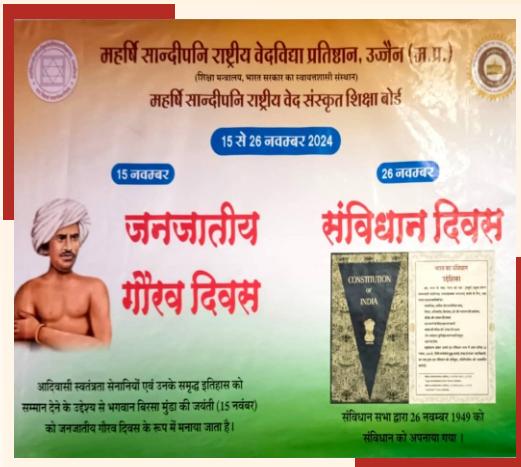
हुगली जिला संस्कृत विकास समिति, हुगली, पश्चिमबঙ्गाल

प्रतिष्ठान तथा हुगली जिला संस्कृत विकास समिति, हुगली, प.बं के संयुक्त तत्त्वावधान में “सभी के लिए वैदिक कक्षाएँ” आयोजित की गई।



जनजातीय गौरव दिवस एवं संविधान दिवस

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली के पत्र दिनांक 04.11.2024 एवं 07.11.2024 के आलोक में देशभर में प्रतिष्ठान से सम्बद्ध समस्त वेद पाठशालाओं, गुरुशिष्य परम्परा इकाइयों तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों में दिनांक 15 से 26 नवम्बर, 2024 तक “जनजातीय गौरव दिवस 2024” एवं “संविधान दिवस 2024” के अवसर पर छात्रों को भारतीय संविधान के इतिहास, मौलिक अधिकार एवं मौलिक कर्तव्यों, छात्रों को संविधान के मूल्यों को आत्मसात करने हेतु प्रेरित किया तथा आदिवासी स्वतन्त्रता सेनानी, आदिवासी भाषाओं तथा तत्सम्बन्धी जानकारी प्रदान की गयी। साथ ही दिनांक 26 नवम्बर, 2024 को भारतीय संविधान की उद्देशिका को पढ़ा गया। इस अवसर पर डॉ. प्रकाश प्रपन्न त्रिपाठी द्वारा “भारतीय जनजातीय का परिचय” विषय आधारित व्याख्यान दिया गया।



79वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह- 2025

गणतन्त्र दिवस भारत का प्रमुख राष्ट्रीय पर्व है, जिसे प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। 1950 में इसी दिन भारत का संविधान लागू हुआ और भारत एक पूर्ण गणराज्य के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। 79वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर प्रतिष्ठान सचिव प्रो. विरुपाक्ष वि. जड्हीपाल ने ध्वजोत्तोलन कर भारतीय तिरंगे को नमन कर समस्त उपस्थितजन के साथ समवेत स्वर में राष्ट्रगान का सामूहिक गायन किया। तत्पश्चात राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के छात्रों द्वारा समस्त अध्यापकों के सान्निध्य में प्रतिष्ठान परिसर में भव्य परेड का आयोजन किया गया जिसका निरीक्षण प्रतिष्ठान सचिव द्वारा किया गया। अपने प्रेरणादायी उद्घोषण में सचिव महोदय ने कहा कि यह दिवस हम सभी को प्रत्येक वर्ष नूतन ऊर्जा, उत्साह एवं समर्पणभाव से राष्ट्रसेवा के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि गणतन्त्र की सुदृढ़ता का आधार नागरिकों की सजगता, कर्तव्यपरायणता एवं नैतिक उत्तरदायित्व की भावना में निहित है। सचिव महोदय ने यह भी उल्लेख किया कि वैदिक वाङ्मय में निहित ज्ञान-विज्ञान के बहुत आध्यात्मिक उन्नति का ही नहीं, अपितु वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सतत प्रगति का भी आधार है। उन्होंने कहा कि वेदों में वर्णित जीवन-दर्शन मानवता को सत्य, कर्तव्य, एकता एवं सहयोग की भावना से ओतप्रोत करता है। वैदिक मन्त्रों में निहित यह अमर संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। इस अवसर पर राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के छात्रों द्वारा देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति की गई। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर प्रतिष्ठान के अधिकारी, कर्मचारीगण तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापक एवं छात्रगण उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम का सञ्चालन श्री देवाशीष तिवारी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, म.सा.रा.वे.वि.प्र. द्वारा किया गया।



प्रतिष्ठान द्वारा द्वादश ज्योतिर्लिंगों में सोमयाग का आयोजन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा वेदों के संरक्षण, प्रचार-प्रसार तथा वेदों में निहित ज्ञान राशि का अनुप्रयोग एवं अनुसन्धान के उद्देश्य से वेद ऋषियों द्वारा दृष्ट जलवायु परिवर्तन, वर्षा पैटर्न, वृष्टिविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, मौसम विज्ञान, कृषि विज्ञान के प्रायोगिक ज्ञान- अनुप्रयोग पक्षों के उन्नयन हेतु तथा जलाशयों में पानी के स्तर को बढ़ाने एवं मानसून की अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए शासी परिषद के निर्णयानुसार देश के द्वादश (12) ज्योतिर्लिंगों – रामेश्वरम्, भीमाशङ्कर, ऋम्बकेश्वर, घृष्णेश्वर, मल्लिकार्जुन, ओङ्करेश्वर, सोमनाथ, महाकालेश्वर, नागेश्वर, वैद्यनाथ, विश्वेश्वर तथा केदारनाथ में प्रयोग रूप में 12 सोमयाग आयोजित किए जा रहे हैं। ये आयोजन सभी ज्योतिर्लिंगों पर जून माह (2025) तक पूर्ण कर लिए जायेंगे।

- 1) 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से प्रथम सोमयाग 27 फरवरी 2025 से 4 मार्च 2025 की अवधि में तमिलनाडु के रामेश्वरम् में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।



- 2) 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से द्वितीय सोमयाग 10 मार्च 2025 से 15 मार्च 2025 की अवधि में महाराष्ट्र के भीमाशङ्कर में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।



- 3) 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से तृतीय सोमयाग 14 मार्च 2025 से 19 मार्च 2025 की अवधि में महाराष्ट्र के ऋम्बकेश्वर में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।



- 4) 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से चतुर्थ सोमयाग 14 मार्च 2025 से 19 मार्च 2025 की अवधि में महाराष्ट्र के घृष्णेश्वर सम्बाजी नगर (औरंगाबाद) में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।



- 5) 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से पञ्चम सोमयाग 25 मार्च 2025 से 30 मार्च 2025 की अवधि में आंध्रप्रदेश के श्रीशैलम् मल्लिकार्जुन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।



- 6) 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से षष्ठ सोमयाग 25 मार्च 2025 से 30 मार्च 2025 की अवधि में मध्यप्रदेश के ओड़ारेश्वर में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन

देश में वेद एवं संस्कृत शिक्षा क्षेत्र में पूर्व-डिग्री स्तर/उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को आधुनिक शिक्षा से जोड़कर मानकीकरण, परीक्षा, सम्बद्धता, मान्यता, प्रमाणीकरण, सत्यापन, पाठ्यक्रम और वेदों की मौखिक परम्परा, पारम्परिक वैदिक या संस्कृत शिक्षा, पाठशाला प्रणाली, प्राच्य शिक्षा के सशक्तीकरण के लिए महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान द्वारा वेदभूषण प्रथम से चतुर्थ वर्ष (कक्षा 6ठीं से 9वीं) तथा वेदविभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 11वीं) एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा वेदभूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा 10वीं) तथा वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा 12वीं) की वार्षिक परीक्षाएँ प्रतिवर्ष आयोजित की जाती हैं। वेदभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 6ठीं) से वेदविभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 11वीं) की वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर एवं वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा 12वीं) की वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन प्रतिष्ठान परिसर में प्रतिवर्ष किया जाता है।

सत्र 2024-25 में वेदपाठशाला एवं गुरुशिष्य परम्परा योजना एवं बाह्य परीक्षा प्रणाली में अध्ययनरत प्रथम से षष्ठ वर्ष की परीक्षाएँ दिनांक 28 फरवरी- 04 मार्च 2025 तक आयोजित की गईं तथा वेद-विभूषण द्वितीय वर्ष की परीक्षा प्रतिष्ठान परिसर में दिनांक 07 मार्च से 11 मार्च 2025 तक आयोजित की गई। इन परीक्षाओं में 10,000 से भी अधिक छात्र प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। विविध विश्वविद्यालयों द्वारा उच्च कक्षा में प्रवेश हेतु प्रतिष्ठान को परीक्षाओं की समकक्ष मान्यता प्रदान की गई है, जिसका उल्लेख अनुलग्नक-1 में किया गया है।



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के “वेद भूषण” (दसवीं / पूर्व मध्यमा समकक्ष) एवं “वेद विभूषण” (बारहवीं / उत्तर-मध्यमा समकक्ष) पाठ्यक्रमों को समकक्ष मान्यता प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों के नाम

1. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, 56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी नई दिल्ली द्वारा
पत्र सं. 8-2/RSKS/Acd/Misc./2009-10/92 दिनांक 23 जून, 2011/केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
वेद भूषण समकक्ष (10वीं) **वेद विभूषण** समकक्ष (10 + 2)
2. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति (आ.प्र.) द्वारा
पत्र सं. RSVP/Recg/2011-12/1283 दिनांक 15 दिसम्बर, 2011/राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति
वेद भूषण समकक्ष एस.एस.सी. (10वीं) **वेद विभूषण** समकक्ष प्राक शास्त्री (10+2)
3. श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति, आं.प्र. द्वारा पत्र सं. SVVU/R.Peshi/Gen/103/2012 दिनांक 13 जुलाई, 2012
वेद भूषण समकक्ष ----- **वेद विभूषण** समकक्ष माध्यमिक एवं 10+2 परीक्षा
4. कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बैंगलुरु, कर्नाटक द्वारा पत्र सं. KSU/SSN/2012-13/185 दिनांक 19 नवम्बर, 2012
वेद भूषण समकक्ष वेद प्रवेश एवं वेद मूल / काव्य **वेद विभूषण** समकक्ष साहित्य
5. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान द्वारा
पत्र सं./जरारासंविवि/शैक्ष./12/5955 दिनांक 11/10/2012
वेद भूषण समकक्ष ----- **वेद विभूषण** समकक्ष वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक
6. श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, ओडिशा द्वारा
पत्र सं. 4454/2013S.J.S.V., Puri Aca - 13/2000 दिनांक 30 अप्रैल, 2013
वेद भूषण समकक्ष ----- **वेद विभूषण** समकक्ष उपशास्त्री (+2 कला)
7. श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय (मानित विश्वविद्यालय) कांचीपुरम, तमிலनாடு
द्वारा पत्र सं. F/SCSVMV/REG/2012-13/D396 दिनांक 27 जून, 2013
वेद भूषण समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं
8. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (मानित विश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड द्वारा
पत्र सं. Acad/Res/2065/2013-14 दिनांक 14 सितम्बर, 2013
वेद भूषण समकक्षविद्याधिकारी **वेद विभूषण** समकक्षविद्याविनोद
9. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा द्वारा पत्र सं. AC - 3/F - 208/2014/7221 दिनांक 27 मार्च, 2014
वेद भूषण समकक्षविद्याधिकारी **वेद विभूषण** समकक्षविद्याविनोद
10. उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, द्वारा पत्र सं. 850/प्रशासन/2016 दिनांक 03 फरवरी, 2016
वेद भूषण समकक्ष ----- **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं
11. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा पत्र सं. CS/AC - 4/2019/1246 दिनांक 15 अप्रैल, 2019
वेद भूषण समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं
12. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा
पत्र सं. आई.जी./एस.आर.डी./आर-IV/समकक्ष/2019/590 दिनांक 4 अप्रैल, 2019
वेद भूषण समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं

13. पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा पत्र सं. ST -1802 दिनांक 12 फरवरी, 2019
 वेद भूषण समकक्ष मध्यमा वेद विभूषण समकक्ष प्राक शास्त्री
14. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार द्वारा पत्र सं. 741 दिनांक 13 जून, 2019
 वेद भूषण समकक्ष मध्यमा वेद विभूषण समकक्ष उपशास्त्री
15. कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत -पुरातनाध्ययन विश्वविद्यालय, नलबारी, असम द्वारा
 पत्र सं. KBVS & ASU/Reg-I-C/101-411 दिनांक 2 मार्च, 2020
 वेद भूषण समकक्ष 10वीं वेद विभूषण समकक्ष 12वीं (शास्त्री - बी.ए. में प्रवेश हेतु)
16. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला द्वारा पत्र सं. 1-1/हि.प्र.वि.वि./शै/2010/खंड - VI/4359 दिनांक 28 जुलाई, 2020 वेद विभूषण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण छात्र विज्ञान सम्बन्धी पाठ्यक्रम को छोड़कर अन्य स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु योग्य हैं।
17. श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली -110016 द्वारा पत्र सं. F 3/12/LBSV/Acad./ 2020/ 2492 / 357 दिनांक 11 सितम्बर, 2020 वेद विभूषण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण छात्र (12वीं के समकक्ष) विविध स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु मापदण्ड पूर्ण करने पर प्रवेश हेतु योग्य है।
18. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र. द्वारा पत्र सं. SSVV/12/Shai.1114/2020 दिनांक 17 दिसम्बर, 2020
 वेद भूषण समकक्ष पूर्व मध्यमा वेद विभूषण समकक्ष उत्तर मध्यमा
19. महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा पत्र क्र. मपासंवि/अका/21-22/1102 दिनांक 07 फरवरी, 2022
 वेद भूषण 10वीं समकक्ष वेद विभूषण 12वीं समकक्ष

टिप्पणी- इन विश्वविद्यालयोंने “वेद भूषण” और “वेद विभूषण” पाठ्यक्रमों को वेद, अंग्रेजी, संस्कृत, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि आधुनिक विषयों के साथ निर्धारित पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण होने पर स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु मान्यता दी है।

प्रेषक / From

सचिव/Secretary,
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

MAHARSHI SANDIPANI RASHTRIYA VEDA VIDYA PRATISTHAN
 (An Autonomous Organisation of Ministry of Education, Govt. of India)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ओ. जवासिया, उज्जैन (म.प्र.) 456006

Vedavidya Marg, Chintaman Ganesh, P.O. Jawasiya, Ujjian (M.P.) 456006

दूरभाष /Telephone : (0734) 2502254, 2502255

ई-मेल /E-mail : msrvvpujn@gmail.com

वेबसाइट / Website : www.msrvv.ac.in

सेवा में / To,

Book-Post

